शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2014

मनुस्मृति में नारी और विवाह संस्कार

प्रा.विनुभाई एन.पटेल
असिस्टेंट प्रोफेसर
एम.एम.आर्ट्स कालेज राजेंद्र नगर, भिलोड़ा, गुजरात, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है - ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम। इनमें भी गृहस्थ आश्रम सर्वोपरि है। सभी धर्मग्रंथों में इस आश्रम को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है, क्योंकि इस आश्रम में व्यक्ति पांच ऋणों से मुक्त हो सकता है। गृहस्थ धर्म की स्थापना में स्त्री-पुरुष का समान रूप से योगदान होता है। भारत के प्राचीन ग्रंथ मनुस्मृति में गृहस्थ धर्म के पालन में विस्तार से व्याख्या की गई है। गृहस्थ धर्म में प्रवेश के लिए विवाह संस्कार है। मनुस्मृति में विवाह के विविध प्रकारों की चर्चा की गई है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं विवाह संस्कारों को बताया गया है।

प्रस्तावना

इस दुनिया के प्रारंभ में ईश्वर ने स्वयं को दो रूपों में प्रस्तुत किया था। स्त्री और पुरुष। उनके शरीर के दाहिने अंग से पुरुष और बायें अंग से स्त्री का निर्माण हुआ था। भारतीय वांगमय के सभी ग्रंथों ने एक मत से यह स्वीकार किया है कि नर और नारी एक ही विराट् पुरुष के दो अंग हैं। अतः दोनों में कोई भेद नहीं है। दोनों बराबर हैं। दोनों में से एक की अनुपस्थिति में कोई भी धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण नहीं समझा जाता । वाल्मीकि रामायण से भी यह तथ्य स्पष्ट होता है।1

नारी को कोमल अवश्य माना गया है, किंतु अति प्राचीनकाल से ही उसका गौरवपूर्ण स्थान रहा है। नारी के कोमल होने के कारण ही यह निर्देश किया गया है कि नारी के नाम भी कोमल होना चाहिए। कठोर नाम का नाम मनुस्मृति के अनुसार उच्चारण योग्य, कोमल, स्पष्टार्थक, दीर्घांत हो। यथा

स्त्रीणां सुखोद्यकर विस्पष्टार्थ मनोहरम्
मांगल्य दीर्घवर्णांतमाषीवादभिद्यानवत्।।

इस प्रकार नारी की कोमलता को उनके नामों के द्वारा भी स्पष्ट किया गया है, किंतु इसे नारी का दोष न मानकर एक गुण माना गया है। मनुस्मृति में नारी को कोमल कन्या के रूपों में स्थान मिला है। नारी को मातृरूप माना गया है। नारी के इस रूप को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मनुस्मृति में नारी के त्यागमय जीवन और उसकी कष्ट सहिष्णुता के कारण उसकी तुलना पृथ्वी से की है। यथा –

अन्यार्थो ब्राह्मणो मूर्तिः चिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्या मूर्तिस्तु भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः।। 3

विवाह संस्कार के विविध रूप

विवाह संस्कार के पश्चात नारी स्त्री के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत होती है। उसका स्वभाव सहिष्णुता और सेवाभाव से ओतप्रोत होता है।

संतान की सुरक्षा उसका उत्तरदायित्व होता है। इसलिए स्त्री धर्मों में मातृत्व धर्म सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। स्मृतिकारों ने नारी के लिए सभी कार्यों को छोड़कर गृहस्थ कार्य को सबसे बड़ा धर्म बताया है। नारियों का विवाह संस्कार ही मुख्य वैदिक संस्कार माना जाता है।

पति की सेवा ही गुरुकुल में निवास करने के समान माना गया है। यथा –

वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारों वैदिक स्मृतः।
पति सेवा गुरौ वासो गृहायौग्नि परिक्रियाः ।।4

मनुस्मृति में विवाह के आठ प्रकार बताये गये हैं और कुछ विवाह को निषिद्ध बताया गया है।
ब्राह्मो, दैवस्तर्थावार्षः प्राजापत्यस्तथाअसुरः।
गांधर्वो राक्षसश्चैव पेशचष्चाष्टमोअघमः।।3
ब्राह्म, रैव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच ये विवाह आठ प्रकार के होते हैं।

आच्छाय चार्ययित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम्।
आहूयं दान कन्याय ब्राह्मे धर्मः प्रकीर्तितः।।4
अर्थात कन्या के योग्य, सुशील, विद्वान पुरुष का सत्कार करे कन्या को वस्त्रादि से अलंकृत करके उत्तम पुरुष को बुलाकर अर्थात जिसको कन्या ने प्रसन्न भी किया हो, उसको देना, वह 'ब्राह्म' विवाह नाम का संस्कार है।
यज्ञेतु वितते सम्यगृत्विजे कर्म कुर्वते।
अलंकृत्य सुतादानं दैवं धर्म प्रचक्षते।।5
विस्तृत यज्ञ में बड़े विद्वानों को वस्त्राभूषण से कन्या को सुशोभित करना , वह दैव नाम विवाह संस्कार है।

अर्थ विवाह- एक गोमिथुनं द्वेवा वरादादाय धर्मतः।
कन्या प्रदानं विधिवदार्यो धर्मः सउच्यते।।
अर्थात एक गाय, बैल का जोड़ा अथवा दो जोड़े वर पक्ष से लेकर धर्मपूर्वक कन्यादान करना 'आर्ष' यानी अर्थ विवाह कहलाता है।
कन्या और वर को यज्ञशाला में विधिपूर्वक रूप के सामने 'तुम दोनों मिलकर गृहस्थाश्रम के कर्मों को यथावत् करो, ऐसा कहकर दोनों की प्रसन्नतापूर्वक पाणिग्रहण होना, वह प्राजापत्य विवाह संस्कार के नाम से जाना जाता है एवं वर की जातिवालों और कन्या को यथाशक्ति धन देकर होम आदि विधि कर कन्या देना आसुर विवाह कहलाता है।
वर और कन्या की इच्छा से दोनों का संयोग होना और अपने मन में मान लेना कि हम दोनों पति-पत्नी हैं। हनन, छेदन अर्थात कन्या के रोकने वालों का विदारण कर कोसती, रोती, कांपती और भयभीत हुई कन्या को बलात् हरण करके विवाह करना राक्षस विवाह है।

सुप्तामतां प्रभतां वरहो यत्तोपगच्छति।
स पापिष्ठो विवाहानां पैशाचष्चाष्टमोअघम्।।
जो सोती हुई, पागल हुई व उन्मत्त हुई कन्या को एकांत में पाकर दूषित कर देना, यह सब विवाहों में नीच से नीच महनीय दुष्ट, अतिदुष्ट पैशाच विवाह है।
इन विवाहों में प्रथम चार विवाह ब्राह्म, दैव, आर्ष और प्राजापत्य इन विवाहों से पाणिग्रहण किए हुए स्त्री-पुरुषों से जो संतान उत्पन्न होती है वे वेदादि विधा से तेजस्वी, आप्त पुरुषों की संगति से अतिउत्तम होते हैं। इसके अतिरिक्त चार विवाह आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच इन चार विवाह से उत्पन्न हुई संतानें निंदित कर्म करते हुए नीच स्वभाव वाली होती हैं।

निष्कर्ष

हमारी भारतीय संस्कृति में श्रुति और स्मृति का स्थान सर्वोपरि है। इसलिए मनुस्मृति में निर्दिष्ट प्रथम चार विवाह को ही संस्कार के साथ जोड़ा जाता है। उनके बाद के चार विवाह हैं वह मात्र नाम के लिए ही हैं। उसका संस्कृति के विचार से मूल्य नहीं है।

संदर्भ

1 मनुस्मृति: एक परिदृष्टि, डॉ.मीरा त्रिपाठी, साहित्य निलय प्रकाशन, कानपुर

2 मनुस्मृति, डॉ.रामजी उपाध्याय

3 धर्म और समाज, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

4 धर्मशास्त्रीय व्यवस्था संग्रह, डॉ.सुभद्रा शर्मा

5 भारतीय धर्म व्यवस्था, वाचस्पति गेरोला